मिर्गी पर महत्वपूर्ण जानकारी

माता–पिता/मरीज के लिए मार्गदर्शक पुस्तक

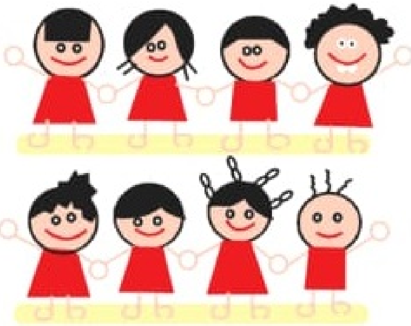

मिर्गी की बीमारी

दौरा क्या होता है?

सामान्य भाषा में इसे फिट, तान, दौरा, झटका, खेंच या चमकी कहते हैं। इसके कई प्रकार हो सकते हैं जैसे पूरे शरीर या शरीर के किसी हिस्से में रह–रह कर खिंचाव होना, आंखे या चेहरे का एक तरफ होना, कुछ समय के लिए बेहोशी आ जाना, असामान्य संवेदना या अनुभूति जैसे डर लगना, कुछ दिखाई या सुनाई देना, एकटक देखना या अपने में गुम हो जाना, असामान्य व्यवहार।

दौरा क्यों होता है?

हमारा मस्तिष्क छोटी–छोटी कोशिकाओं से बना होता है जिन्हें तंत्रिकाएं कहते हैं इन्हीं तंत्रिकाओं के अत्यधिक उत्तेजित होने से दौरे आते हैं। इनका बुरी आत्माओं या भूतप्रेत से कोई संबंध नहीं है। ऐसा समझना एक अंधविश्वास है, इसमें कोई वैज्ञानिक तर्क नहीं है।

मिर्गी की बीमारी क्या है?

हर दौरा मिर्गी नहीं होता। दो या उससे अधिक दौरे बिना किसी प्रत्यक्ष कारण हों तो इसे मिर्गी की बीमारी कहते हैं।एक हजार में 4–5 व्यक्ति इस बीमारी से पीड़ित हैं।

क्या कारणों से मिर्गी होती है?

अन्यथा सामान्य बच्चों में होने वाली मिर्गी प्रायः अनुवांशिक होती है। मिर्गी जन्म के समय या जीवन के शुरूआती समय पर दिमाग को नुकसान के कारण हो सकती है। दिमागी संक्रमण, दिमाग में बनावटी नुक्स, दिमागी चोट या दिमाग में गांठ से भी हो सकती है। शरीर के रसायनों में गड़बड़ी से भी यह हो सकती है (मेटाबोलिक)। मिर्गी से पीड़ित कुछ बच्चों को शरीर पर सफेद या काले निशान, चेहरे पर लाल निशान या अन्य चर्म निशान होते हैं (न्यूरोक्यूटेनियस सिन्ड्रोम्स)।

किसकी सलाह लें और क्या जाँच करवाएँ?

बालरोग विशेषज्ञ या बाल तंत्रिकाविज्ञान विशेषज्ञ की सलाह लें। बच्चे की शारीरिक जाँच से अधिकतर कारणों का पता लग सकता है। कुछ बच्चों में

कारण पता लगाना मुश्किल होता है। तकलीफ पर आधारित जाँच करवाई जाती है। ई.ई.जी तथा दिमाग का सी.टी स्केन करवाए जाते हैं। मिर्गी से पीड़ित कुछ बच्चों के दिमाग की एम.आर.आई जाँच करवाई जाती है। हर दौरे पर यह जाँच कराना आवश्यक नहीं है।

क्या कोई इलाज है?

इलाज कारण पर आधारित है। दिमागी संक्रमण, दिमाग का कीड़ा, दिमाग में गांठ और कुछ मेटाबोलिक कारणों का इलाज संभव है। अन्यथा दौरों को काबू में रखने हेतु दवाइयां दी जाती हैं। परंतु पूरी तरह से मिर्गी को ठीक नहीं किया जा सकता। दवाइयाँ आखिरी दौरे के दो साल बाद तक दी जाती हैं और उसके बाद क्रमशः बंद करते हैं। चिकित्सक द्वारा सुझाए गए ईलाज का पालन करना जरूरी है नहीं तो संभव है कि दौरे दोबारा हो जाएँ।

यदि मिर्गी की दवाइयों की खुराक भूल गये हों तो क्या करें?

दिन के किसी एक निर्धारित समय पर दवाई देनी चाहिए। यदि एक खुराक़ भूल गये हैं, तो याद आने पर उसी समय देना चाहिए। यदि दूसरी खुराक का समय आ गया है तो पहली खुराक़ दूसरी खुराक के साथ दे सकते हैं। यदि एक से अधिक खुराक भूल गये हैं, तो डॉक्टर की सलाह लें।

क्या दवाइयों के प्रतिकूल असर हैं?

सभी दवाइयों के कुछ प्रतिकूल असर हैं परंतु वे सभी में नहीं देखे जाते। आमतौर पर नींद ज्यादा आती है, जो समय के साथ ठीक हो जाती है। यदि बच्चे को चमड़ी पर लाल निशान, मुँह में छाले, पीलिया, बेहोश होना, स्वभाव में बदलाव, बुद्धि के विकास में कमी, उल्टी या संतुलन में तकलीफ होती है, तो डॉक्टर से तुरंत संपर्क करें।

दवाई बन्द करने पर बच्चा ठीक रहेगा इसकी क्या संभावना है?

70 प्रतिशत बच्चे दवाई बन्द करने के बाद ठीक रहते हैं। यह मिर्गी के कारण तथा अन्य दिमागी तकलीफ के होने पर आधारित है। यदि बच्चे को दिमागी तकलीफ हो, परिवारजनों में मिर्गी हो, ई.ई.जी या दिमाग का स्केन असामान्य हो या कुछ मुश्किल प्रकार की मिर्गी हो तो दौरे फिर से आने की संभावना होती है। सामान्यतः दवा बंद करने के शुरूआती 6 महीनों में दौरे फिर से आने की संभावना होती है।

बच्चे को दौरा आने पर मुझे क्या करना चाहिए?

बच्चे को दौरा पड़ने पर क्या करें और क्या न करें?

क्या करें	क्या न करें
1. शान्त रहें।	1. घबरायें नहीं।
2. बच्चे के साथ रहें।	2. बच्चे को पकड़ने या दौरे को रोकने की कोशिश ना करें।
3. हो सके तो दौरे के शुरू होने और खत्म होने का समय नोट करें।	3. बच्चे के मुँह में कुछ ना डालें।
4. बच्चे के कपड़े ढ़ीले कर दें।	4. बच्चे को ठंडे या गरम पानी में ना रखें।
5. बच्चे को एक तरफ करवट कर लिटाएं।	
6. बच्चे को खतरनाक चीजों से दूर रखें, जैसे आग,फर्नीचर के तेज कोने इत्यादि।	
7. बच्चे के सिर के नीचे मुलायम चीज रखो जिससे सिर फर्श से ना टकराए।	
8. मुँह और नाक से आने वाला पानी और झाग साफ करें।	

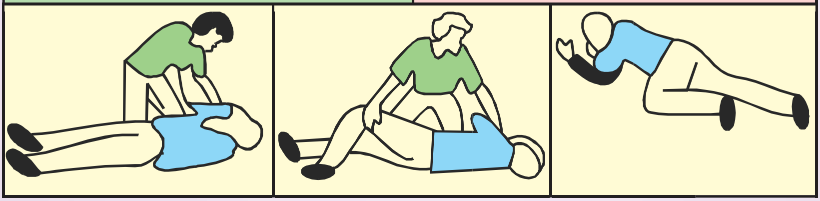

नाक से मिडाजोलाम देने का तरीका

1. बच्चे को चित्र 1 में बताये अनुसार किसी एक करवट (रिकवरी स्थिति) में लिटायें।
2. मिडाजोलम स्प्रे बोतल (चित्र 2a) के नोजल को हल्के से किसी एक नासिकाछिद्र के अंदर डालें।
3. बोतल की नोजल को नीचे की तरफ दबायें इससे दवाई नासिका छिद्र के अंदर जाती है। अपने चिकित्सक की सलाह के अनुसार, निर्दिष्ट संख्या में स्प्रे करें।
4. अगर मिडाजोलम नेसल स्प्रे उपलब्ध ना हो तो, इन्जेक्शन मिडाजोलम (चित्र 2b) (1 मि.ग्रा./मि.ली. या 5 मि.ग्रा./मि.ली.) डॉक्टर द्वारा बताये गये उचित मात्रा में बिना सुई की सिरिंज से नाक में डाला जा सकता है।

चित्र–2a

चित्र–2b

बक्कल मिडाजोलाम देने का तरीका

1. डॉक्टर द्वारा बताई दवा की मात्रा 2 एम.एल. की सिरिंज में निकाल लें। सुई को (जिसमें सिंरिंज हो) दवा कि शीशी में डालें दवा को उल्टा करें और सुई से दवा को निकालें जितना कि डॉक्टर ने बताया हो। दवा को सीधा करें और सिरिंज को निकाल लें। बुलबुले को सिरिंज से निकाल लें और सुई को निकाल लें।
2. बच्चे को रिकवरी पोज़ीशन (चित्र 1) में लिटायें।
3. सावधानी से सिरिंज को (बिना सुई के) दांत और गाल के बीच के स्थान में रखे तथा पिस्टन को दबा कर दवा निकाल दे। (चित्र 3)
4. बच्चे के दोनों होठ बंद करवा दें और जिस तरफ दवा डाली है, उस गाल को नीचे रखें, जिससे दवा बाहर न निकले। दवा को असर करने में 3–5 मिनट का समय लगता है क्योंकि दवा घुलकर खून में जाती है।

चित्र–3

क्या दौरा

ध्यान रहे कि
ही रूक जाते
की जरूरत प
किया जाता

रेक्टल डाइजॉपाम सपोजिटरी देने का तरीका

1. दवा को डॉक्टर की बतायी मात्रा में प्रयोग करें।
2. दवा को सावधानी से पैकेट से निकाले। (चित्र 4)
3. बच्चे को एक तरफ रिकवरी पोजिशन में रखें, घुटनों को छाती पर रखें (चित्र 5)।
4. दवा को गुदा में डालें।

चित्र 4

5. दोनों कूल्हों को 2 मिनट तक जोड़ कर रखें।
6. इस तरह से दवा को असर करने में 5–8 मिनट का समय लगता है क्योंकि दवा घुलकर खून में जाती है।

क्या दौरे को फिर से आने से रोका जा सकता है?

1. बच्चे को समय पर डॉक्टर द्वारा सुझाई गई दवाइयाँ मिलती रहनी चाहिए। सही समय पर सही दवाई की सही मात्रा देना आवश्यक है। समय–समय पर जाँच और हर बार डॉक्टर को दवाइयाँ दिखाना जरूरी है।
2. उकसाने वाले कारणों से बचें, जैसे कुछ बच्चों को टी.वी देखने पर, वीडियोगेम खेलने पर, गर्म पानी में नहाने से, नींद कम लेने से, खाना न खाने पर, संगीत सुनने पर दौरे आते हैं। मिर्गी से पीड़ित बच्चों को पर्याप्त नींद लेनी चाहिए।

चित्र 5

यदि बच्चे की मिर्गी दवाई से काबू में नहीं है तो अन्य विकल्प क्या हैं?

बाल तंत्रिकाविज्ञान विशेषज्ञ द्वारा दवाई और उसकी मात्रा का परीक्षण करवाना आवश्यक है। कुछ दौरों के लिए कुछ नई दवाइयों का उपयोग किया जा सकता है। जो बच्चे विशेष आहार लेने के लिए राजी हों उनमें कीटोजेनिक या ऐटकींस एल.जी.आई.टी. आहार उपयोगी हो सकता है। मिर्गी के लिए शल्यक्रिया एक

विकल्प है। इम्पलान्टेबल डिवाइस (वेगल नर्व स्टीम्यूलेटर) भी एक विकल्प है।

क्या मिर्गी वाले बच्चे स्कूल जा सकते हैं?

यह कारण पर आधारित है किन्तु अधिकतर बच्चे स्कूल में ठीक प्रदर्शन करते हैं। अभिभावकों को यह नहीं सोचना है कि पढ़ाई बच्चे के लिए बोझ या तनाव है।

स्कूल के शिक्षक तथा स्टाफ को बच्चे की तकलीफ की पूरी जानकारी देनी चाहिए। उन्हें प्राथमिक उपचार समझाना है। उन्हें माता–पिता तथा डॉक्टर का संपर्क नंबर देना है। कुछ दवाइयों से नींद का ज्यादा आना संभव है, जिससे स्कूल के समय में तकलीफ हो सकती है। नींद समय के साथ कम हो जाती है अन्यथा दवाई की मात्रा या समय में डॉक्टर की सलाह अनुसार परिवर्तन करना पड़ सकता है।

Dr Vivek Sirolia
DM Pediatric Neurology
AIIMS,New Delhi
Associate Professor, Dept of Pediatrics, RDGMC, Ujjain (M.P.)
Superspeciality OPD- Monday to Saturday- 9 to1 pm, 3 to 5 pm – RDGMC
Contact no- 9654347457